Electronic Interdisciplinary International Research Journal (EIIRJ)
A Peer Reviewed Interdisciplinary Journal UGC Approved Journal No 48833
Impact Factor 5.20 ISSN 2277-8721

संसार की प्रचीनतम संस्कृतियों में स्त्रियोंका स्थान

डॉ. विलास जाधव
विभाग प्रमुख इतिहास विभाग,
जे.ई.एस. महाविद्यालय, जालना

प्रा. वाय.डब्ल्यू. शेख
इतिहास विभाग
जे.ई.एस. महाविद्यालय, जालना

प्रस्तावना :

हर एक देश की विशेताएँ उसकी संस्कृतियाँ सभ्यतासे जुडी रहती है। उस देश की प्राचीनता संस्कृतिपरही निर्भर रहती है। सामाजिक जीवन का आरंभ होते ही लोग परिवार बनाकर रहने लगे और उनमें सभ्यता का विकास हुआ। परिवार में पुरूष ओर स्त्रियोंका समावेश होता था। किसी भी सभ्यता की उन्नत व गिरी अवस्थाका मापदण्ड है उसके समाज में स्त्रियों का स्थान।

संस्कृति / सभ्यता शब्द की व्युत्पत्ति :

संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कार से है जिसका अर्थ संशोधन करना, परिष्कृत करना, उत्तम बनाना या सुधारना–सँवारना है।

संस्कृति का अर्थ :

संस्कृति का अर्थ वे स्वभावगत चरित्रगत, विचारगत अथवा कर्म में व्यक्त अच्छाइयॉं, विशेषताएँ और चेतनाएँ है जो शिष्ट लोगो के जीवन का अंग होती है, और जिनका अनुकरण परिवार, परिवार से वर्ग, वर्ग से समाज तथा समाज से राष्ट्र की विशेषता बन जाता है और कालांतर में पीढी दर पीढी उस राष्ट्र के व्यक्तियों की अलौकिक सम्पति के रूप में परंपरा से प्राप्त होता है। इस प्रकार समाज की विशिष्ट स्वाभाविक प्रवृत्तियों की आदर्श सीढीपर चढकर व्यक्ति सुसंस्कृत कहलाता है।[1] यद्यपि गहराई से देखे तो संस्कृतिका मूल आधार मानवता है और बीजरूप में मानव संस्कृति एक है, तथापि देश विशेष की भूमि, वातावरण अर्थात एवं बाह्य पक्ष के आधार पर ही प्रायः संस्कृतियाँ देश विशेष के नाम से जानी जाती है जैसे मिस्र संस्कृति, रोमन संस्कृति, बेबिलोनियन संस्कृति, सिंधू संस्कृति आदी हर एक संस्कृति में स्त्रियों का स्थान अलग अलग रहा है।

1) **मिस्र संस्कृति :** मिस्र संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। मिस्र

के लोग परिवार बनाकर सभ्य जीवन व्यतित करते थे। मिस्रमे हैथोर देवी की उपासना व्यापक रूप में की जाती थी।[2] लडकियों को स्कूल नही भेजा जाता था लेकिन उनकी माताएँ उन्हे घर गृहस्थी संभालने और घरेलू दासो से काम लेने की ट्रेनिंग देती थी।[3] लेकिन शाही परिवारो में लडकियों को पढाया जाता था। रानी हातशेपसुतने अपनी बेटी नेफ्रूरे की शिक्षा का दायित्व अपने प्रख्यात स्थापित सेनेनमट को सौंपा था।[4] मिस्र के राजा अखनातनने एक विवाह का पुरस्कार किया। उसकी रानी नोफ्रेतीती मिस्र की प्रसिद्ध महिला थी जिसकी तुलना महारानी क्लियोपेट्रसे की जा सकती है।[5] समाज में स्त्रियों को प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। वे घर की चार दिवारों में कैद नही रहती थी वे पिता की संपत्ति में उत्तराधिकारी होती थी। उन्हें राज्य सिंहासनपर बैठने का आधिकार था। सम्राज्ञी हातशेपसुत ने मिस्र को सुदृढ शासन प्रदान किया। मिस्र में पौराणिक कथा में कहा गया है की, पहला मम्मी बनाने का श्रेय इसिस को दिया जाता है जिसने अपने पति औसिरिस के शरीर को मसाला लगाकर सुरक्षित रखा।[6]

एक विवाह प्रथा और सगौत्रविवाह प्रथा समाज में प्रचलित थी। मिस्र की सभ्यता नैतिकता, पूर्णता सामाजिक सुबद्धता पर आधारित थी।

2) मैसोपोटामिया संस्कृति :

दजला–फरात घाटी में ईसा से 5000 वर्ष पहले जिस सभ्यताका विकास हुआ उसमें सुमेरियाई, असीरियाई बेबीलोनियाई लोगो ने योगदान दिया इसलिये समूचे क्षेत्र के नाम से उसे मैसापोटामिया सभ्यता कहा जाने लगा। सुमेरियन संस्कृति में मातृदेवीकी पूजा सर्वाधिक जनप्रिय थी। सुमेरिया बेबीलोनिया में इनन्ना उपज की देवी मानी जाती थी।[7] बेबिलोनियामें इश्तर मातृदेवी थी।[8] एक विवाह प्रथा प्रचलित थी। पति और पत्नी दोनो का संपत्ति पर संयुक्त अधिकार होता था। स्त्रियों को तलाक का अधिकार था परंतु बिना अदालत तलाक नही होता था। हम्मूरावीने स्त्रियों के लिये कानून बनाया की अगर सैनिक लौटकर ना आये तो उसकी पत्नी को पुनर्विवाह करने की अनुमति प्रदान की जाये असीरियाई समाज में महिलाओं को गव्हर्नर के पद प्रदान किये जाते थे परंतु यहाँ स्त्रियों की दुर्दशा थी क्यों कि उन्हें बहुत बार ऋणदाता के पास जमानत के तौर पर पिता रख सकता था। बहुपत्नि प्रथा प्रचलित हो गई थी परंतु पहली पत्नी को ही कानूनी अधिकार थे।[9]

3) युनान (ग्रीस) संस्कृति :

युनान में नारी का स्थान घर के भीतर सीमित था। इसका मतलब यह नही कि ग्रीको के जीवन में महिलाओं का महत्त्व नही था। वे अपने घरो की व्यवस्था सम्भालती थी और उनका अपने परिवारो पर भारी प्रभाव रहता था।[10] पर पुरुष अपने पत्नियों को समान नही मानते थे। गणिकाओं की वजह से बहुपत्नी प्रथा प्रचलित हो गई थी।[11]

4) चीनी संस्कृति :

चीन में पुरुष प्रधान समाज था इसलिये स्त्रियों का स्थान गौण था। बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन था। चियेह याने, दासी रखने की प्रथा प्रचलित थी। काव्यसंग्रह में कुलीनवग में लडकियों के प्रति किए जनेवाले सौतेत्वे व्यवहार का वर्णन मिलता है। स्त्री और पुरुष समान रुप से श्रम करते थे। राजपरिवार के स्त्रियों की दशा अच्छी होती थी। स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की चहारदीवारी तक सीमित था और वे प्रायः अशिक्षित होती थी। वृद्ध स्त्रियों का सम्मान किया जाता था। विधवा विवाहपर प्रतिबंध न था। संपन्न परिवार के स्त्रियों की स्थिती अच्छी रहती थी।[12]

5) रोमन संस्कृति :

रोम का समाज पितृसत्तात्मक समाज था। रोम में पुरुष और स्त्री दोनो से ही उच्च–नैतिक मानदंडो की अपेक्षा की जाती थी। स्त्रिया सम्मानपूर्वक जीवन व्यतित करती थी। उच्चवर्णिय स्त्रीयों को अधिक स्वतंत्रता निर्णय के अवसर और शिक्षा प्राप्त होने लगी इसका कारण अभिजात वर्ग की समृद्धि भी रहा। संपत्तिका अधिकार वैधानिक रूप से उन्हें मिल गया। स्त्रियों की सामाजिक स्थिति और सम्मान में बहुत वृद्धि हुई। रोमादेवी की उपासना की जाती थी। और सामाजिक बंधनों में शिथिलता आई। प्राचीन जगत में कही भी स्त्रियों की वह उच्च स्थिति नही थी जो रोमन स्त्रियों की थी।[14]

6) सिंधू संस्कृति :

भारतीय संस्कृति सिंधू संस्कृति के नाम से जानी जाती है। सिंधू संस्कृति के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे। मातृदेवी (पृथ्वीमाता) की अनेक मूर्तियाँ यहाँ से मिली है।[15] नारी को शक्ति का अवतार समझा जाता था।[16] नारी मूर्ति को बहुलतासे ऐसा प्रतित होता है कि, इनका समाज मातृप्रधान था।[17] ब्राँझ की नारी मूर्ति से अनुमान लगाया जाता है कि सिंधू संस्कृति की स्त्रियाँ

आभूषणों से अलंकृत रहती थी। वे नृत्य–गान की कला में प्रवीण थी।[18] सिंधू संस्कृति में स्त्रियों का स्थान धार्मिक, सामाजिक जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। उन्हें पुरूषों के बराबर समाज में स्थान था सामाजिक और धार्मिक कार्यो में स्त्रिया सामुदायिक रूप से सम्मिलित थी।

निष्कर्ष :

संस्कृति हमारे पुरखो की धरोहर है। वह हमारे समस्त समाज की समग्र उपलब्धि है। युगो युगो से यह निरंतर विकासशील रही है। एक दुसरे से यह निरन्तर आदान प्रदान करती रही है। उसकी मूलभूत विशेषताओं में कभी अन्तर नही आया। उसमें मानव–मूल्यों को सदैव सर्वोपरि स्वीकार किया गया है। सभी संस्कृतियों में स्त्रियों का स्थान सम्मानका था। भारत, युनान मिस्र आदि देशों में प्राचीन काल से आद्यशक्ति की पूजा प्रचलित थी। नारी को शक्ति का अवतार समझा गया। ज्यादातर संस्कृतियों में एकपत्नी विवाह का प्रचलन था। स्त्रियों की नैतिकता पर और उनके अधिकारोपर विशेष ध्यान दिया गया था। संसार की प्राचीन संस्कृतियों में स्त्रियों का सामजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजकिय जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उनकी माता, पुत्री और पत्नि के रूप में सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। समस्त प्राचीन संस्कति में स्त्रियों के प्रति आदरभाव हमें देखने को मिलता है। इस प्रकार प्राचीनतम संस्कृतियेां में स्त्रियों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण ऐसा रहा है वह सम्मान तथा आदर की पात्र रही है।

संदर्भ :

1. कपूर श्यामचंद्र– भारतीय संस्कृति दिग्दर्शन, आर्य बुक डेपो, दिल्ली, 1971 पृ.9
2. मित्तल नेमिशरण– प्राचीन सभ्यताएँ, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपूर, 2012, पृ.37
3. एलिस मैजेनिस पोर्टलैंड, ओरेगन ऐपल–संसार का इतिहास, युरेशिया पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1966, पृ.41
4. मित्तल नेमिशरण– प्राचीन सभ्यताएँ, पृ.43
5. वही, पृ.39
6. सिंह बिन्देश्वरी प्रसाद– विश्वसभ्यता का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास बाँकीपूर पटना, 1952, पृ.34
7. वही, पृ.64
8. कोसंबी दामोदर धर्मानंद– प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन,

प्रा.लि. 2009, पृ.93

9. मित्तल नेमिशरण – प्राचीन सभ्यताएँ, पृ.79–80
10. एलिस मैजेनिस पोर्टलैंड, ओरेगन ऐपल–संसार का इतिहास, पृ.98
11. मित्तल नेमिशरण – प्राचीन सभ्यताएँ, पृ.129
12. वही, पृ.195, 196
13. वही, पृ.410, 413
14. एलिस मैजेनिस पोर्टलैंड, ओरेगन ऐपल – संसार का इतिहास, पृ. 138
15. माथुर एम.के., प्राचीन भारतीय राजनितिक एवं सामाजिक इतिहास, आशा पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2011, पृ.27
16. कपूर श्यामचंद्र–भारतीय संस्कृति दिग्दर्शन, पृ.26
17. डॉ.राधेशरण, प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2009, पृ.35
18. कपूर श्यामचंद्र– भारतीय संस्कृति दिग्दर्शन, पृ.10